 ISSN: 2582-6530

संपादकीय

तुम्हारा अंतिम गीत

(स्मृति: तेमसुला आओ)

मैं गा चुकी होऊंगी
अपना अंतिम गीत
जब मैं नहीं होऊंगी
विचलित
एक अशक्त शरीर
और टूटी हुई आत्मा से।

गा चुकी होऊंगी
अपना अंतिम गीत
यदि बच्चों की खिलखिलाहट
और स्त्रियों की गप्पें
प्रतिक्रिया नहीं पैदा करेंगी मुझमें।

- **तेमसुला आओ** (हिंदी अनुवाद: श्रुति एवं माधवेंद्र)

यह पंक्तियाँ तेमसुला आओ के रचनात्मक विवेक को समझने के लिए पर्याप्त हैं। तेमसुला हमारे समय की ऐसी महत्वपूर्ण हस्ताक्षर हैं, जिनकी रचनाओ में पूर्वोत्तर भारत का सामाजिक-सांस्कृतिक परिदृश्य सूक्ष्मतर ढंग से अभिव्यक्त हुआ है। समग्रता में देखें तो तेमसुला ने अपने साहित्य के माध्यम से नागा संस्कृति को संरक्षित करने के साथ-साथ उसे विस्तार देने का कार्य किया है। उनकी रचनाओं का सरोकार अंतिम जन से है। सांस्कृतिक अभिव्यक्ति तेमसुला की रचनाशीलता का मूल स्वर है। बीते अक्टूबर माह में तेमसुला आओ ने इस दुनिया को अलविदा कह दिया। यह न सिर्फ पूर्वोत्तर भारत बल्कि पूरे साहित्यिक जगत के लिए अपूरणीय क्षति है। अंग्रेजी भाषा की एक चर्चित कवयित्री, कथाकार और एथनोग्राफर के रूप में तेमसुला आओ की विशिष्ट पहचान है। उत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय, शिलांग के अंग्रेजी विभाग में बतौर प्रोफेसर उन्होंने लंबी अवधि तक कार्य किया। वर्ष 2013 में कहानी संग्रह लेबर्नम फॉर माइ हेड (अंग्रेजी) के लिए उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार से नवाजा गया। नागालैंड के परिदृश्य में देखें तेमसुला आओ का योगदान अविस्मरणीय है। उनके सांस्कृतिक एवं साहित्यिक अवदान को दृष्टिगत रखते हुए यह कहना तर्कसंगत है कि तेमसुला आओ अपने आपमें एक संस्था सरीखे थी। उनके विशिष्ट योगदान को ध्यान में रखते हुए नागालैंड सरकार ने उन्हें राज्य महिला आयोग का अध्यक्ष नियुक्त किया था।

तेमसुला आओ की साहित्यिक दुनिया का फ़लक अत्यंत व्यापक है। उनके अब तक पाँच कविता संग्रह, दो कहानी संकलन एवं एक उपन्यास प्रकाशित हैं। इसके अलावा उन्होंने कई वाचिक साहित्यिक ग्रन्थों को संकलित एवं संपादित करने का कार्य भी किया है। हाशिये के समाज की मूल चिंता तेमसुला आओ की साहित्यिक जमीन का केंद्रीय आधार रहा है। वह अपनी एक पुस्तक की भूमिका में लिखती हैं- "अपनी कहानियों में मैं लोगों के जीवन की ओर फिर से पलट कर देखने की कोशिश करती हूँ, जिनके दुख दर्द अब तक सार्वजनिक होने से बलपूर्वक दबाए, छुपाए और अस्वीकार किए जाते रहे।... मनुष्य के मन के किसी कोने में यह निष्ठुरता छुपी बैठी है, जो अन्याय और मनुष्य विरोधी अत्याचार तब तक देखती और बर्दाश्त करती रहती है, जब तक इसके पंजे सीधे उस तक नहीं पहुँचते।" (आओ, तेमसुला, 2022) तेमसुला आओ का यह मंतव्य उनके वैचारिक दृष्टिकोण और सामाजिकता का जीवंत प्रमाण है। उनकी रचनाओं में सामाजिक परिवर्तन की छटपटाहट है। मिसाल के तौर पर उनकी कविता की यह पंक्तियाँ द्रष्टव्य है- "अगर ज़ख़्म बोल सकता/ तो किस भाषा का करता प्रयोग/ किस न्याय की करता तलाश/ किसे देता दोष/ अत्याचारी को/ उसकी ताकत के लिए/ या पीड़ित को उसकी कमजोरी के लिए" (मूल रचना- तेमसुला आओ, अनुवाद: श्रुति एवं माधवेंन्द्र, 2012) तेमसुला आओ हमारे समय की ऐसी चेतस रचनाकार हैं, जिन्होंने अपनी रचनाओं में हमेशा जन-सरोकारों को बचाए रखा। उनकी रचनाशीलता से गुजरते हुए महसूस होता है कि प्रकृति चेतना और उनकी समृद्ध लोक परंपरा ने उनके साहित्य को और अधिक उर्वर बनाने का कार्य किया है। विकास के नाम पर हो रहे दमन और शोषण के प्रति तेमसुला आओ की चिंता उनकी कविता 'बोन्साई' में प्रमुखता से दर्ज है- "उपवन/ सीमित कर दिए गए/ सिर्फ अविकसित फलों को उपजाने के लिए। / पृथ्वी का विस्तार / सिमट गया है और प्रदर्शित है/ नन्हें गमलों की सीमा में।" मूल रचना- तेमसुला आओ, अनुवाद: श्रुति एवं माधवेंन्द्र, 2012)

तेमसुला की महत्वपूर्ण साहित्यिक कृतियों का जर्मन, फ्रेंच, असमीया, बांग्ला और हिंदी भाषा में अनुवाद हो चुका है। समग्रता में देखें तो तेमसुला आओ पूर्वोत्तर भारत की ऐसी आवाज थी, जिन्होंने उत्तर पूर्व के सामाजिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक परिदृश्य को वैश्विक स्तर पर पहचान दिलाने का कार्य किया है। तेमसुला द्वारा 'आओ' समुदाय की समृद्ध लोक विरासत को संरक्षित करने का अनूठा प्रयास उल्लेखनीय और अविस्मरणीय है। कंचनजंघा पत्रिका समूह द्वारा हाल ही में पद्मश्री तेमसुला आओ स्मृति व्याख्यानमाला आरंभ की गई है। इस सीरीज के द्वारा हम उनकी रचनाशीलता एवं समग्र अवदान को वैश्विक पटल पर रेखांकित करने का प्रयास करेंगे, यही उनके प्रति हमारी श्रद्धांजलि होगी।

पूर्व की भांति कंचनजंघा का यह अंक समग्रतः पूर्वोत्तर भारत की रचनाशीलता पर केंद्रित है। इस अंक में हमने एक नए कॉलम 'हिंदी के सजग प्रहरी' को आरंभ किया है। इसके तहत हिंदीतर प्रांतों विशेष रूप से उत्तर पूर्व में हिंदी भाषा एवं साहित्य के विकास में योगदान देने वाले महत्वपूर्ण हस्ताक्षरों की भूमिका को रेखांकित करने का प्रयास किया जाएगा। इसकी शुरुआत हम डॉ. रमण शांडिल्य जी से कर रहे हैं। विदित हो कि विगत माह डॉ. शांडिल्य हमारे बीच नहीं रहे। इस सीरीज की शुरुआत रमण जी से करने का बड़ा कारण

यह है कि डॉ. शांडिल्य कंचनजंघा पत्रिका के परामर्श मंडल के वरिष्ठ सदस्य थे। इस पत्रिका के उन्नयन के प्रति उनका विशेष अनुराग था। निस्संदेह अरुणाचल प्रदेश में हिंदी भाषा एवं साहित्य के विकास में डॉ. शांडिल्य की भूमिका अविस्मरणीय है। उनकी रचनात्मक संवेदना को व्यापक फ़लक पर समझने के लिए इस अंक में शामिल डॉ. राजीव रंजन प्रसाद का लेख उल्लेखनीय है।

हिंदीतर प्रांतों में आज भी सृजनात्मक स्तर पर हिंदी लेखकों की कमी है। पृष्ठ प्रेषण से बचते हुए पूर्वोत्तर भारत के प्रत्येक राज्यों से विविधतापूर्ण सामग्री का संकलन करना, बेहद चुनौतीपूर्ण है। उक्त संदर्भ को दृष्टिगत रखते हुए हमने अलग-अलग राज्यों से विशिष्ट रचनाकारों को क्रमशः स्तंभकार के रूप नियमित लेखन करने का आग्रह किया है। इस कड़ी की शुरुआत हम सिक्किम प्रांत के वरिष्ठ साहित्यकार एवं अनुवादक सुवास दीपक से कर रहे हैं। निश्चित रूप से उनकी रचनाशीलता एवं अनुभवों से कंचनजंघा पत्रिका समृद्ध होगी, ऐसा हमें विश्वास है।

हम आजादी के अमृत महोत्सव के 75 वर्षों की दहलीज़ पर खड़े हैं। हमारे लिए यह आत्मालोचन का समय है, ताकि सही मायने में हम अपने समय और समाज के वास्तविक धरातल को समझ सकें। इस अंक में हमने सिक्किम के महत्वपूर्ण स्वतंत्रता सेनानी त्रिलोचन पोखरेल पर केंद्रित दुर्लभ सामग्री प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। स्वाधीनता संग्राम के इतिहास में उत्तर पूर्व की तस्वीर भले ही ओझल है, किंतु त्रिलोचन पोखरेल जैसे व्यक्तित्व से संबंधित प्राप्त तथ्यों के आधार पर आज इतिहास का पुनर्मूल्यांकन करना भी तर्कपूर्ण जान पड़ता है।

पूर्वोत्तर भारत के पौराणिक संदर्भ बहुत ही ऐतिहासिक हैं, कुछ विवादास्पद भी। इस कड़ी में डॉ. मुनीन्द्र मिश्र का मिजो रामकथा पर केंद्रित मंतव्य हम पाठकों के मध्य विचार-विमर्श और बहस के लिए प्रस्तुत कर रहे हैं। हिंदी कविता खंड के अंतर्गत सिक्किम, असम और अरुणाचल प्रदेश के स्थानीय रचनाकारों को शामिल किया गया है। मिजोरम राज्य पर केंद्रित जेनी मलसोमदोङकिमी का लेख, नागालैंड एवं मेघालय राज्य की लोककथाएँ अपने आपमें विशिष्ट हैं, इसका मूल्यांकन आप जैसे सुधी पाठक ही करेंगे। अंक के विलंब के लिए हमें खेद है। यह अंक अब आपका है, पाठकीय प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा के साथ...

(प्रदीप त्रिपाठी)